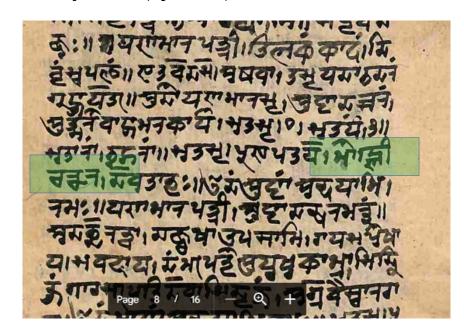
Maunji Bandan (Upananam)





Ref:

Q Search Wikipedia

Create a new account

Munj

https://mr.wikipedia.org/s/71v 文A 26 languages ~

Article discussion

Read on editing Look at the history

From Wikipedia, the free encyclopedia

Munj / Upanayana is the thirteenth Sanskar out of the sixteen Sanskars in Hinduism . ^[1] This is one of the major rites of Kumara. According to tradition, this rite is prescribed only for men belonging to the three castes of Brahmins , Kshatriyas and Vaishyas . It is also known as Maunjibandhan and Vratabandhan.

विष्टुभिष्टे प्रवृद्धा यवानिकीद॥ प्रवृद्ध धार्म्य गर्म द्वारायका मर्भः मि उर्थक है। भ्रत्ति से वर्ष पक्ष प्रज्ञान स्थात्रणः। चित्ते भ्यान्यम्॥ बल्भियाम द्वा प्रभयभागितिका मंब्रेंग्योः लारम्॥भंभायभाग्याय भारत्यः॥ भनः सन्ययेगा नुपादारि॥ हरायव्यक्त आ भभभावा गणा १५ म यदा भः॥भभयभावगाय।भागल हेनेत ह्रेनभः। एवं महीनभः भ्रंथनभः॥ प्रथ न्भःग्रीय नभः।। वर्मनभः। म्भभूभा नगरध्यद्वगन् सूचनविष् भवाप निम्हेरा। प्रवस्था। आयराशान नदीन। यवन भूसु॥ मनि ग्रेवी। भेभय भावगाय। प्रथमान वभः। भृतः मव रेवीग्रियामाउक्या उजनीयाभिभा यभाव गरा। गाद्वाण्या भिष्ठान म्यक् यराभन्म रूजने गन्भनिक्टी सुनीय भावश्रामा वित्रभः भेभेया भाव कलम भाक्र उपाठिति ठ व नाया सम्ह भन्न भूक क्रिश्र व्याप्य अल्थ्वेष्ट्र च्या गरे भ

ष्य प्रथमीया सब्हरिय ग्रेसिन ब्राह्म भि। भगभे: पुरिन्दु इंडी, भीड़ भान में कुर उंड रभः॥ भूरे रूपमाने वर्षा भाग्य भारती गयानभेनेवसं। विवय याभनभः॥ उउः च्या भानि एनं उथ विम ॥ ३३: ५० न इया जिथ्यम् छ। न्यं भानीपक्र एडिए।। इन्ययम्भ उउ।विष उम्मेम ब्युद्धमा हवा वृत्रा प्रभाष्ट्रमा ज्॥ १॥ ३ से भारती पक्षाम उपयं भि भारत वर्णम् कहि । इति भारत माजः ॥ अधायभाने मुख्यसी॥॥ क्रियम् वं भु अभि उण्यु चु पा यवाग्रिडनी नय उड्ड भेगून, यराभानश् उमे उलक्सा उगिर्ध्य प्रियं प्रियं प्रियं भागिर्थ। नुप्याने, यय किनि भवित्रयोग्याने एवमा भिन्ने वह नि वादु भारी। गथा य य उ इवन से गिंभाः। नवेनवे ठवितरय भाराज्य द्वाराधमा भिरुग्मा॥ रंगरेव है किए जिंड यन् मस्भित्र के प्रीव भाषुः॥ इतः एउतिष्ठाति।। यदगायाः। न्यभागमाय्यान्य भाग्यां भाष्यां भाष्या याभउर्धभगद्गीनेत्र न ग्रेय ग्रहः। नभी

34.

4=

भेनविभूणना गळनभा छ उना॥ म्बा,मलयुउभवन्युउभग्हः॥यु जयाथक प्रमादिशाध्यम्ब व्या लमभ(४४(वृत्र) भूयाना ॥ इभेयमि युग्दायस्य वना गाकि।पे मना वीगी भा॥ ३३: या छ । इसे व सं। इसे विता 33:यच्ये वर्गि वर्गिवड्सद्यासम् हट हैं भादेगिक वालना भाउलभान वि।याग्रम्।यापुद्रभाष्ट्राध्रः ठमा।। हियगिकभा बुक्त नभरणे मही किस्मू भेट्र इ.सन् दिरीडा॥ अडाक उनाह्या।यमियद मुठियानी।मुठ्या ग्रम्भ। उवा। दिलग्यह दना। ग्रम्भि॥ 33:कलमभाविभक्ता ४वन् ब्राप एकितिभा विभन्तन्॥ उरुक्लम भद्रारामा गिकिमिन भय परका मक्रा कल्ला उउउम अभवना वासा मुस्सा याग्रम् यहा अव्यक्तभाउ॥ उत्मिरंग

उ। थगा जमलदिभा। प्रणन्। उड्डानन नाजा। विनायकथा। भपागनथि देवउ भत्रधनार्ते प्रथमीभः॥भंभ्रागणभाति। भाषामा भक्या। मद्य भक्ता गना दरा।। ॥ ३३: च्रिम्युभा भश्रत्भा उलक नि जापावादरहा। एल लिए।। ३३: इक् ग्रनभा किडा।। उद्यासिश दिभिग्राउगने भक्उन(॥ उमिन्वर्गागिक उद्यायमना भक्ष गनाकिमा। मुग्। पनि इनि । परक्ष ना वित्र विना ग्रनी आवित्र विकिति।। गुरुहिक्मदक्रि। थडा गना उत्तर्।।वा विग्नाधिवना॥३३। सम्मानगुभ्यः॥ गलपउद्यम् छः भाषास्य प्रस्टः॥ ॥ ३इ: भिषला॥ अमियिक्यांगास माग्रिक्य।। थाई उला। निर्मुं उकी। नग्भनवा लय(महा प्रिंधित भेष्ठ भट्ड भी थिए। भरिभीदा जुरिभ मिर्विष्मं जालीया जा । जिस्म मिर्ग्य सभ

उथ-

नभग्रा भाष्ट्रिभू नभग्वा ग्री दिविष्ट भस्तम् अयम् । वस्य भवाउयाम् नभनायायवभग्नभन विद्यम्भ नभक्षावयुग्नाहरू लभभन्भम् वंभर्ट हस्भन उयाभान्भति। भरा यभमा विवसमा यदा भदि विवासमा वमण्यमभागभा प्रमाशःभभाष वायम्लिकिस् ग्रेवंगर॥भाष्ट्रभमनम उ। स्यासमनम् घा सभ जा समनम उयाभनभे । भा व क्रालभभ नम्हरू या यप्रक्र कड्ना ।।।ग्राम्भमनभ नगर्ति सम्भागभ्य ययगर् विमाल भनभग्गाम्यभह॥७॥ र्घायभभन्भ मच्छ्याभनभ्ष्या राषा विभागभग वंभित्र हरू भन उया भानभाउ॥ उ॥ च्यामाभवभाग्या। ३३:११३५३६ भ्म भील्ड।भाषित्रात्रात्रात्रात्रामगा ॥ ॥५ए ५३ये गुर्व विच भाषि॥। माहिमाडी। भूग, चिद्द द्रवनी पाल मी अमेर र उयो विस्थान भारप्य रून

जीजन करा जा। विद्वित्तन्मित्राम्हिपरि इभेम् ए। भभाविक वाग्राक्र म भारे भविश्व के हि। हरि सभा। विश्वत्रम् भेडेन् उन्हार्य वं जिल्ला स्ट्रांस्क भर्या मानु कितिधिक्छ भन्न निष्ट भारति है। मगुर् मह्यामाद्या भूजीना भूज्य कभग्रामा भट्या ना गाय भाग वदा भाव उद्धान हास्त पावर्णा भद्धासाहः भावराप न्यषा गया प्रतारे। भगवेश लि। भ वित्रभागवस्त्राभावत्। भूभावस् हा भारति के हो।।। पर भारत या अप द्धामाभाशालय अधि इसिभाश ध्य न इ जिनान्दा हा प्रदान जंड वीदी सं नाने, रोस्पादली तुन, विशे धारुषा अरुया भे जिम्बारी, प्रस्ति उन्हान्यायश्च रिजानायभित्राध दालागुडा भिष्णाः इडमम् भद्रल

उप न

भवलण्डलाकना विः भवि दनवि। नमन् यस भद्गिकरलाभितिगादि।भय वला, भव इद्यं उरगः॥ भम् भया अंगा अउभारा अल्यामा भाक्त जिल्लाम् द्राम्य प्रमा भ्यापयीमा उस्वतीय भागसाभित्रभा नम् भित्रभान्। निव्यभाने।। भार्मानाङ्ग, रा वङ्टिग्रहाभी याउग्डीडा, यडीना बहु र्न भूमनिमः। भगमा। भवनम्। तिर्वा भाई गडा भलिलां गुरु यग्ट हर्म एडा यग्राभाष्ट्रा नडा भारत राजाना एडाया क्रमा के दह रे या नी भा भिने यराभा नमें हा नेभा मृत्ति वट गु विच स्या है। हेया नाभार भा अल्डा मणिल् क्रिति। वम् भिष्क यु गड़्य क्यावने वजा। यज्ञिला मा न्यम्बर्द्ध। णस णस्त्रा सर्गित्र स्वरूपि जित्रमीत्र। यराभने। बीक्र है।। एस्वक् माराज्यिमा वचारा, भनी उसभा भटि एः। भड़िन भाभाभद्भगाउँ, भद्भुपाउँ न्य अः। भड़म् वीर्भमा उमारिण्या।

राभारभि। जियम जारी भरा किया अभ भि। भड़न् वारिभारता भि। भड़े वे म कः॥ वयामन भन्ने। विलक् कर्व। क्रि वंस्थलंग एउ बर्माम् वया। उस्यमार्थन ग्रह्मुज्या चर्मिय्य भानस्। उद्या जना खर्नवासभनकाया भउसा १। भउयो ॥ भुज्याक्ष्याभुक्त्याभुक्त्याभुक्त्या च इन। स्युग्रहः।। इसंख्रद्यं युच्या। नसः।।यराभान भन्ने। सुराम्यनभन्।। म्बर्धा यद्वा भारत्य माने । रायभ्येष याभवराया ग्रापट खयुव का भाग्य क्र गारमा भारत प्रयोभ क्षेत्र । अग्रवेश नग या ४ मर्ग प्रयाभन्मः॥ भउत्य ए पुत्रया भा सी बरान स्नारे व अप्टायम भएं मर्यामनम् शामहद्व पविद्रभग ्ट्यणित्राम् क्वा भित्रम् । उभयाभा में भभाषि, स्वभग्रे वस्मभग्रिभित विलंटाङा । प्रभाव ॥ अलग द्राभचानः स्वापरमञ्जी।स्य भण्य अग्री यद्यां भावा भड़कार

34.

विज्ञाय नामारणना च्या भूकराति। उपयामा भूमामाया उद्देश विज्ञाति । भूमाति। वर्गील गिर्मा, हर् भाग भागण न्ति ग्राहे । इत्या मार्गा । उउए महिमा यकि ए विरोधान्य ग्रम्भिक भारित उसक् ग्रम् स्थान उद्याकि भारा, लड इभेड्राभागयात्र, भन्द्राकिभादान्त्रद इन्स्ट्रेन्स्य अराम् अराम् मन्या मका लाना मजा १४३ विषार। स्यमप्टायल्ड। साद्वेल्यः भूसी। वरि सिनिम, एनि भीदा वारी भर के ला खभन भग्सीदा। उडिभाई छ। एला िस् विश्वास्त्र मान्य सक् रेस् भमाल हुन गरी नुभः गरी नभः भरीन भः असे नभः ग्रम् हेन्पयाम भानाः सूर्व ल्यां । । स्विक्तारिस्या। जुमार्से या भायनस्। भनभा प्रथ्य यथान्।। इ मुद्य लर्म करिया है अस्ता, राष्ट्रिया ुत्राक्षण चर्याः भन्ने भेद्रा भारतिस विष्टु, भारमाथरान्। मा कियानिति। भुक्ताम्याभग्द्रलीयस्। भक्षान्ति विभाग किया यहा यहा यहा पह निस्या स्था

माजा ३३: ७ नावमास्त्रियान ३० विकास है । एक पनिस्त है निष्ठ ने ।। एउँ मिकिन्ने रामा एउंपी के उप भारत है स्त्री न्द्रम् ब्रह्मद्वार भरक्षित्रं प्रवर्ण । उत् नण नम्मानामा नमा उद्दा नाय वणा । क्रःभदगम्यमगत्रवाशाङ् न् रमें हक्करये। नमउद्यः पुरामंदिक्षाः भद्याः जः॥३॥ उध्भवीय धेयाम अ नाभ उन्हा। भा इष्टाः स्मल्हा यहा गा उस्युक्तवा अस्य विण्यस्य स उद्दः भेज वद्यागा । धर्म भाउ विचक्रमाभन गत्व भन् उस्मिन् अपन्ता अपन इस्मा नामान स्थापित ।गहन्यन्यसं युक्तकश्या उस्ता ७% उभू पेर्यस्त्रम् उर्गिनम्भ उद्धः स्वा००। भने इव नभाग्ययं उउ जगाद्राविगए, इ, देश जल्मम्बद्धायामादम्यसुसादा। भा वर्गाएक गाउँ किला । स्राप्तिवर्गका विली वे पर्यामित्रः चरा मुक्राः क्षेत्रा देवियुग च । चयक्म इस इस अन्स रागडा स्तिथं उत्र थिए। मारिता इवड । उत्रः चंडा। लयमें हा भाषा भाग भाग भित्र लेका छः प

उभ-

जिम्द्रभर लंभए भिष्टे करंग्ड भेडेगा। नवरापाप्रकर्दः धदः राष्ट्रगर्भात्र छिउस्प्राण्डा उद्गायान्य नस् प्रतीया अद्भाष्ठ लं विकरी॥अरं : उच्छः॥अरोष मिने:।। स्मीवाकात्रमा।। पक्तभावकः गाय द्रेनार: हिंद्र हिंद्र कि कि कि हिंद्र मार्थित भी वया विमार्ड भयम् विमाद जी मिर । उनः भदः भूम्पार्गात्र ॥ प्रमुख्यात्र ॥ भद्रभा भावमरसाभाउसभाक्ती रहानिभेत्रे ।।।भाष्ट अरान भर्मा भन्द विष्ट । विक्रम्या छिल भस्य यया विकाद्या भित्र सं उद्यान भने नभः भिरंयभाच मरम्य। इंप्रराम्याभाषिप राया भिरं भाराग्य, भाराप्त में भारी हिन्त वाद्या यया विकेदा वर्ष प्रमान मारिक्षः।भाउन्गिवा जवादयां भिद्र वं कर्ने भचरणगात्रीका निक्ण मार्गियेव। विविद्यस्थिमा उसीमास्या इति । नाकभू भंग ठजा। भीत्र प्रायम् का इतिहा क्रवं येन, क्वनं नियं जुन्नानियं जी कार्नाने भेग रिका गविभवा प्रयाभूपमा। इ ह वादनेभा। विकासिक नमः॥ मनिर्देशी लाएः मा

द्रगवनः भारत्यभान्यसम्य प्रमा भवः मबस्यी। स्र्पंतिं।।हग वर्डेड भागारेगाभित्रभार मरार मंबद्धाना भिरायभाग्व गराया भभाल कर् गर्नेनभः एवं। चंडीनभः भुष्पनभः॥ वसेनभः॥ भिरूस् भागाराधः ग्रामनाम् जानविषि भवापित्र स्टिम्।। भवन्यः १। गु प्रमुक्ति। भव्मीनं । एवं प्रसु । नभक्ष भर्यसम्बर्गाय। महिल्लेये उपर भिष्ठान्यम्। न्यान्यम्। न्यान्यम्। भाविता भिरायभाग्वागायाभ्यभुभाग रहानिभेड़। नभेनेचे ग्रंनिवेदिया भिन्मः ॥ 33: भूणना गुयभा ॥ ।। भिद्रेरणना ५भ भिर्डिसलीभक्षा॥ विभिर्द्रिता राउ याउ। इयान भिर्मण । एषियी भ उद्युम्। भिर्द्यस्त्री,गर्निभयाविगद्यः। भिराय पर्व प्याव दिएम श्वापा ।।।। रमाभर भने मस्प्यंसा रस्याति व उब्देश नहाउ नरणाय देवने नभ नम् राज्ञाजनस्य जानाराम थि भारतम् त्राचाराभगाकल्कमा शाला

उप-

पानुभेभक्रम्॥प॥ नाभक्रम्॥पलाभ (ज्या॥ ४५ म्हा। विश्वासिम्यहा। वाषयीमा पद्धाः विश्वासिम्यहा। विश्वसिम्यहा। वि रउः॥ दे वर्ति चपति भाषिक्षात्रा भित्रयण + उप्राप्ता ।॥ हे निच भामि। चराइभाइ। देव उसका डि। भाषिर न्माभेइयड्र युर्दिगमााभार्तिग्रह्मी।भे हि। निर्मास्था निर्माश्या भागा अस्मिन्नी उत्तर्भव अर्थः। इस निर्देश्यप भिनमः॥ निष्ठे नहां भाउभु इ र गीभाइय भागग्या उं प्रदे चर पं भिनमः। प्रदे क्षाय अभिन प्रति । प्रदेश प्रति । 33:15 ति वृद्ध मानिक्ता विभागे देशयेशा स्वल्यु द्वाशिक्षाम् भारम् । महमा । भ्रम द्वा अग्रामा देशहा।।।। एविप्रश्ना भा।।।।। भैवल इतिम्हानिमा उरलि चिम्र पर्में। स्वा देशिया स्वास्त्र सिर्व में मानः नम्झन् सदेल प्रभुगा च्डाक् उवरभग्ने वयदाने कडवः राष्ट्र

वस् अदं ॥ महत्वा माना भग्रमावनीक् हि भिर्धियम् भर्गः॥ अपूर्णिया वी यु उनिवा भद छग्ना राग उभु अमुभुग्द॥९॥ अ अद्भू एनविति। यदिकाण क्रानी चभामा सम्मानभागिमु अविद्यासि क्रभार् । मगलि गुल्ने लिपिया र अगा है। ग्रामि रुषुल्पिकिमार । भय लाभ लिहा यउल्कृदं। यु क्रकल्म श्रामक्षी इ। अचारभापित्रे ॥ उस्मिन अस भक्षत्र अभनभा समुभक ले। निषित्र भद्य ए उक्। थदा गक्री है। उपथउ यन् भ गर्नाभाषकामा। यसभातिः कार्ना उद्यस्त्रभारं। दसुम्य पारिभागा रुप्दा निग्दा ॥ ७३ । उल्लम्य । यव भेजा । यद निम्निमिष्टिका ब्रह्मम् इव्यक्ति।।।। भवाकाग्रा पुरालकार उसुभाष्ट म्वक वाधिता म्यकस्था नवभीषा कार्या भक्त बाना करा है जेने भद्रमाय नवरापा प्राप्त । मामा प्राप्त । स्वा

उस-

उद्देशक ति वर्ष प्रदेश विच वयह प्रवः चार्ता अनः धराइत्य प्रवास्था । प्रवा उत्य निम्म निह्न विष्ठा निम्म वश्यक्ति द्र त्रभे णिये गाति। हैंग वाबित मुद्दे वने प्रितं विकृतिया विस्था अय उपे, विक्य यो स्वार्थिति । उप्तिन्त्रा अपति । उप्तिन्त्रा । अपति । अपत या वृष्ट्या मध्यत्र भन्द्र अस्त्र स्त्र स् भाग्य में के शामिम सम्बद्ध विस्तार है। उद्भाग मित्र भारत मान्य के मान्य के जिल्लामुन्जा। ३३ में में में। भारि ग्रामायग्रं रेयस्य भवितः अभविति ने व कि प्रकार के प्राप्त के प्रमुख्य के कि विक्रा कि विक्र कि विक्रा कि विक्र कि विक्रा कि विक्र कि वि यामाना उस्भव का अवसमामु के न कर ४ गुदे 3:11 वालियक मेथभादि ३।। ए ५० भजिति विचाभित्रसाए का भज्भा प्रत्में के व म्भन्यत्। इत्राम्यान्य भूत्र प्रहराद्यिम् म्रम्भाभिगु मे सपये ग्रंभा देने सग्रहरू

34.

किल्ल निर्माक्षेत्रकीमा त्रमुक्मा निर्माश्याश ल्यां अलं जिल्ला के वित्र वित् इसी भागी अधिक सिंग के विद्या के विश्व मिस् इंडियादा। इंड ४ए मिने नेसन्।। डिर्म ल्यमेह। यरग्भन्म। हालकमा। यरगभ्यश्री योजपीरिष्टः, भयभाभारु अवा यामन्ति। उर भाके वासः॥ उथा विभवनाः, म्यानिष ध्यमाभद्रा यहाभी भेदा ब्राचनः। उद्याद्वाभ १वअक्राणि में विसामिति वर्षा सम्बंहि सभारि रः॥ ग्रहीं उसे। ग्रहीं नं। या रंगनंभर्भा के अग्रिमा। इर अयानानि। सिम्रहे अस्परिणाः वर्षे स्थानि। सिम्रहे अस्परिणाः सिम्रहे अस्परिणाः सिम्रहे अस्परिणाः सिम्रहे सिम नभा॥ प्राथ्येन सरं म्पायेश्या ॥ विप्रस्थ निर्वेग्रा एक विद्या एक विद्या में में के विद्या प्रमान कर्मा रयीर्भाषा। ४ए न उर्ग एउ अधि नबाउर व सम्माना स्थान स् बें से मांक दिशीयायम् द सामान् मायमाद। राजीयायस्याम्। भगहः स्याप्ताप्त क्रिक्ष मद्राह्म यभाषा गद्रवेभाषा ब्रह्म लभाषा मिति सिने से भाषा। ३३: उभिने ।। सिन् में सर्वे।। उत्मवः श्राण्यस भिन्नः चा उत्प्रमयः उत्भन स्याक्ष्मा प्रमुख्यं भाषा मध्य ख्येच उन्हें कि महियं द्वीरा भाषा दें भवीरा